THE PIONEER
06-09-2018

Aroma sector growth impressive in India: FRI dir

PNS ■ DEHRADUN

The aroma sector has shown impressive growth in India at an estimated rate of 10 to 11 per cent annually.

Forest Research Institute (FRI) director Savita said this while speaking in the inaugural session of a five-day training cum workshop on essential oils, perfumery and aromatherapy jointly organised by chemistry and bioprospecting division of FRI and the Fragrance and Flavour Development Centre (FFDC), Kannauj on Wednesday.

Speaking on the occasion, the FRI director highlighted various benefits of aroma on human health and environment and underlined the need for exploring new sources and applications of essential oils other than the conventional ones.

She stated that the aroma sector has shown impressive growth in India at the estimated rate of 10-11 per cent annually. Forest based fragrances have a key role in women empowerment through provision of livelihood and income opportunities to rural as well as urban women.

She appreciated the collective efforts of the institute's Chemistry and Bioprspecting Division and FFDC for organising the training in the interest of aroma entrepreneurs. She also emphasised its importance in catering the need for fragrance and flavour industry in India.

Speaking as the guest of honour, former principal secretary of science and technology in Uttar Pradesh, Harsharan Das emphasised on the scope, potential, and opportunities of fragrance and flavour in healthcare, cosmetics, food processing and aromatherapy sectors.

Under the prevailing scenario of business in aroma sector, Das stressed on the need for integration of various disciplines like bioinformatics, biotechnology, chemistry, modern processing and distillation technology to put the Indian aroma sector at the forefront of global trade.

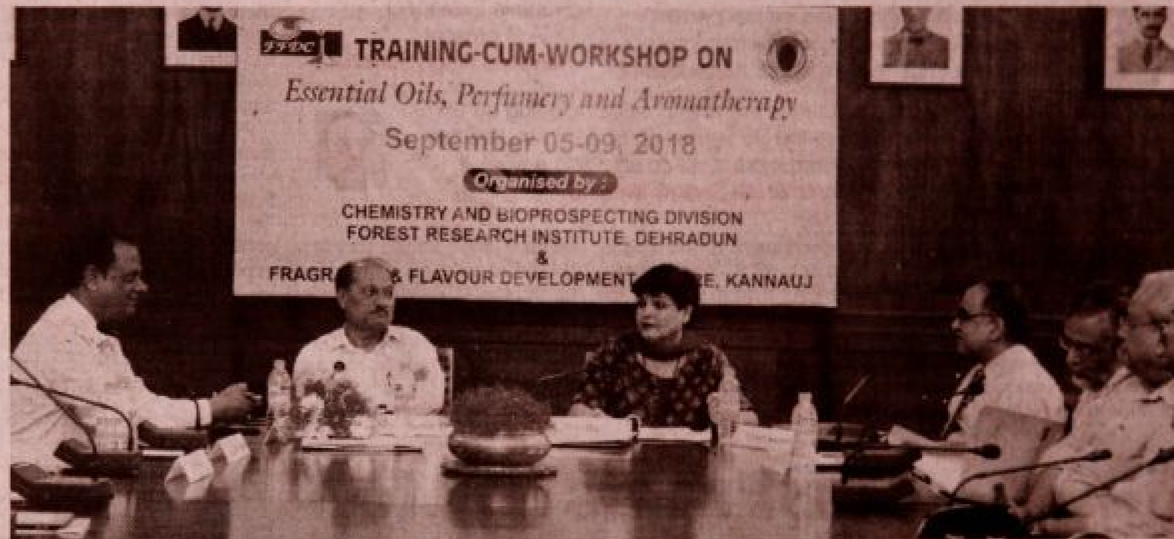

FFDC director SV Shukla informed the gathering that the course curriculum of the training has been designed to meet the expectation of diverse group of participants.

FRI director highlighted various benefits of aroma on human health and environment and underlined the need for exploring new sources and applications of essential oils other than the conventional ones

The training cum workshop will continue till September 9 and will provide a detailed exposure towards fundamental and applied aspects of processing, quality assessment and therapeutic benefits of essential oils and their applications in perfumery and aromatherapy for advancements of scientific knowledge, skills and entrepreneurship of the participants through lectures and practical demonstrations by experts from aroma industry, scientists and practicing aroma therapists.

दैनिक जागरण
06.09.2018

देश में बढ़ रहा सुंगधित तेलों का कारोबार

जागरण संवाददाता, देहरादून: वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में सुगंधित तेल, परफ्यूमरी व अरोमाथैरेपी पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू किया गया। देशभर से कुल 30 लोगों को यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ताकि विभिन्न क्षेत्रों में जीविकोपार्जन की दिशा में अहम कार्य किए जा सकें।

बुधवार को यह प्रशिक्षण एफआरआइ के रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग व सुगंध और सुरस विकास केंद्र, कन्नौज के संयुक्त तत्वावधान में शुरू किया गया। इस अवसर पर संस्थान की निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि देश में सुगंधित तेलों से संबंधित कारोबार 10-11 फीसद की दर से बढ़ रहा है। वन आधारित सुगंधित तेलों से सुदृढ़ आर्थिकी अपनाकर महिला सशक्तीकरण की दिशा में योगदान दिया जा सकता है। वहीं, उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान सचिव हरशरण दास ने इस सेक्टर में रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग के प्रमुख डॉ. विनीत कुमार, डॉ. प्रदीप शर्मा, डॉ. नदीम अकबर, एपी सिंह, डॉ. वीके वार्ष्णेय, डॉ. वाईसी त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला

06.09.2018

कार्यशाला में बताए पर्यावरण में सुगंध के लाभ

देहरादून। रसायन एवं जैव पूर्वेक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) और सुगंध एवं सुरस विकास केंद्र (एफएफडीसी) कन्नौज की ओर से आयोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला में स्वास्थ्य और पर्यावरण में सुगंध के विभिन्न लाभों के बारे में बताया। एफआरआई की निदेशक डॉ. सविता ने सुगंधित तेल, परफ्यूमरी और अरोमाथेरेपी पर आधारित पांच दिवसीय कार्यशाला का बुधवार को शुभारंभ किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. सविता ने परंपरागत के अलावा आवश्यक तेलों के नवीन स्रोतों एवं अनुप्रयोगों का पता लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। प्रशिक्षण सह कार्यशाला नौ सितंबर तक जारी रहेगी। इस मौके पर डॉ. प्रदीप शर्मा, डॉ. नदीम अकबर, एपी सिंह, डॉ. वीके वार्ष्णेय, डॉ. वाईसी त्रिपाठी, एसवी शुक्ला, डॉ. अमित पांडे आदि मौजूद रहे।

शाह टाईम्स
06.09.2018

'सुगंधित तेल, परफ्यूमरी व अरोमाथेरेपी' पर प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन

भारत में तेजी से बढ़ा सुगंध उद्योग : डॉ. सविता

■ देश भर से आये तीस प्रतिभागी ले रहे हैं भाग, पांच दिन चलेगी कार्यशाला

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई), देहरादून और सुगंध और सुरस विकास केंद्र (एफएफडीसी), कन्नौज की ओर से आयोजित 'सुगंधित तेल, परफ्यूमरी और अरोमाथेरेपी' पर 5 दिनों की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। भारत के विभिन्न कोनों से आए कुल 30 प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं।

एफआरआई के प्रमंडल कक्ष में प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि निदेशक एफआरआई डॉ सविता ने मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सुगंध के विभिन्न लाभों पर प्रकाश डाला और परंपरागत के अलावा आवश्यक तेलों के नवीन स्रोतों एवं अनुप्रयोगों का पता लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। डॉ सविता ने बताया कि भारत में सुगंध उद्योग ने प्रभावी विकास दर्ज किया है और यह उद्योग प्रतिवर्ष 10-11% की दर से बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि वन आधारित सुगंधित तेलों का जीविकोपार्जन एवं आय वृद्धि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका हो सकती है। उन्होंने सुगंध उद्यमियों के हित में प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग, एफआरआई और एफएफडीसी के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और भारत में सुगंध और स्वाद उद्योग की आवश्यकता को पूरा करने में इसके महत्व पर बल दिया। एसवी शुक्ला, निदेशक, एफएफडीसी, कन्नौज ने एफएफडीसी की गति-विधियों के बारे में उल्लेख किया और प्रशिक्षण सह कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ जिसके बाद डॉ. विनीत कुमार, प्रमुख रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग ने अथितियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सुगंधित तेलों के क्षेत्र में प्रभाग के प्रभावशाली अनुसंधान कार्यों के बारे में बात की। प्रशिक्षुओं को हरशरण दास, आईएएस और पूर्व प्रधान सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उत्तरा प्रदेश सरकार ने भी सम्बोधित किया। उद्घाटन समारोह में एफडीडीसी, कन्नौज से डॉ नदीम अकबर और ए पी सिंह, डॉ. वीके वार्ष्णेय, डॉ वाई. सी. त्रिपाठी, डॉ. प्रदीप शर्मा व एफआरआई के विभिन्न प्रभागों के प्रमुख और अन्य अधिकारी और शोध छात्रों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय सहारा
06.09.2018

एफआरआई में प्रशिक्षण कार्यशाला शुरू

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान के रसायन व जैव प्रक्षेषण विभाग व सुरस विकास केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला बुधवार को शुरू हुई। सुगंधित तेल, परफ्यूमरी व अरोमाथैरेपी विषयक इस प्रशिक्षण कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के 30 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान की निदेशक डा. सविता ने किया। उन्होंने सुगंधित तेलों के उत्पादन के लिए परंपरागत विधि के अलावा नवीन अनुप्रयोगों का पता लगाने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा कि वन आधारित सुगंधित तेलों का जीविकोपार्जन व आय वृद्धि के माध्यम से महिला सशक्तीकरण में अहम भूमिका हो सकती है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व प्रधान सचिव हरशरण दास, एसवी शुक्ला, डा. विनीत कुमार, एपी सिंह, डा. वीके वार्ष्णेय और डा. वाईसी त्रिपाठी आदि इस अवसर पर उपस्थित रहे।

THE HIMACHAL TIMES
06-09-2018

Training cum Workshop on "Essential Oils, Perfumery & Aromatherapy" commences

DEHRADUN, SEPT 5 (HTNS)

The 5 days Training cum Workshop on "Essential Oils, Perfumery & Aromatherapy" jointly organized by Chemistry and Bioprospecting Division, Forest Research Institute (FRI), Dehra Dun and Fragrance and Flavour Development Centre (FFDC), Kannauj commenced today. Altogether 30 participants from different corners of India representing diverse fields are attending the training programme. Inaugurating the Training cum Workshop in the Board Room of FRI, Chief Guest Dr. Savita, Director, FRI, Dehradun highlighted various benefits of aroma on human health and environment and underlined the need to explore new sources and applications of essential oils other than the conventional ones.

She stated that the aroma sector has shown impressive growth in India at the estimated rate of 10-11% annually. She expressed that forest based fragrances have a key role in women empowerment through providing livelihood and income opportunities to rural as well as urban women. She appreciated the collective efforts of Chemistry and Bioprospecting Division, FRI and FFDC for organizing the training in the interest of aroma entrepreneurs and emphasized its importance in catering the need of fragrance and flavour industry in India. Addressing the trainees as 'Guest of Honour', Harsharan Das, IAS and Ex-Principal Secretary, Science & Technology, Govt. of Uttar Pradesh, emphasized scope, potential, and opportunities of fragrance and flavour in healthcare, cosmetics, food processing and aromatherapy sectors. Under the prevailing scenario business in aroma sector, Das stressed the need of integration of various disciplines like bioinformatics, biotechnology, chemistry, modern processing and distillation technology to put the Indian aroma sector at the forefront of global trade. S.V. Shukla, Director, FFDC, Kannauj mentioned about the activities of FFDC and gave an account on technical sessions of the training cum workshop. Shukla informed the gathering that the course curriculum of the training has been designed to meet the expectation of diverse group of participants.

The programme started with lighting of Lamp followed by welcome address by Dr. Vineet Kumar, Head, Chemistry and Bioprospecting Division. Welcoming the guests and participants, Dr. Kumar talked about the impressive work record of Chemistry and Bioprospecting Divisions in the area of essential oils during yesteryears which paved the path for development of essential oil industries in India. The Inaugural Programme ended with the vote of thanks proposed by Dr. Pradeep Sharma, Scientist-B and Convener of the training programme. The inaugural function was attended by Dr. Nadeem Akbar and A.P. Singh from FFDC, Kannauj; Dr. V.K. Varshney, Dr. Y.C. Tripathi, Scientists of Chemistry and Bioprospecting Division; Group Coordinator (Research), Head of Divisions, FRI and other officers and research scholars of FRI.

During the first technical session S.V. Shukla delivered a lecture on scope, sources, importance and national and international market potential of essential oils, perfumery and aromatherapy and business opportunities. Then Dr. Pradeep Sharma talked about essential oil extraction techniques. Further Dr. Amit Pandey, Forest Pathologist delivered a lecture stating fungi as a novel and non conventional source of aroma followed by a lecture by Dr. Nadeem Akbar on Therapeutic and Perfumery Values of major aromatic plants.

The Training cum Workshop will continue till 9th September and will provide a detailed exposure towards fundamental and applied aspects of processing, quality assessment and therapeutic benefits of essential oils and their applications in perfumery and aromatherapy for advancements of scientific knowledge, skills and entrepreneurship of the participants through lectures and practical demonstrations by experts from aroma industry, scientists and practicing aroma therapists.

जनभारत मेल
06.09.2018

प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन समारोह

देहरादून, संवाददाता। रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान ;एफआरआईद्धए देहरादून और सुगंध और सुरस विकास केंद्र ;एफएफडीसी, कन्नौज द्वारा संयुक्त रूप से सुगंधित तेल, परफ्यूमरी और अरोमाथेरेपी पर 5 दिनों की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आज दिनांक 5 सितंबर 2018 को शुभारंभ हुआ। भारत के विभिन्न कोनों से आए कुल 30 प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। एफआरआई के प्रमंडल कक्ष में प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि, डॉ सविता निदेशक, एफआरआईए देहरादून ने मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सुगंध के विभिन्न लाभों पर प्रकाश डाला और परंपरागत के अलावा आवश्यक तेलों के नवीन स्रोतों एवं अनुप्रयोगों का पता लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। डॉ सविता ने बताया कि भारत में सुगनाध उद्योग ने प्रभावी विकास दर्ज किया है और यह उद्योग प्रतिवर्ष 10.11ः कि दर से बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि वन आधारित सुगंधित तेलों का जीविकोपार्जन एवं आय वृद्धि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका हो सकती है। उन्होंने सुगंध उद्यमियों के हित में प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभागए एफआरआई और एफएफडीसी के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और भारत में सुगंध और स्वाद उद्योग की आवश्यकता को पूरा करने में इसके महत्व पर बल दिया। सम्मानित अतिथि के रूप में प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुएए श्री हरशरण दासए आईएएस और पूर्व प्रधान सचिवए विज्ञान और प्रौद्योगिकीए उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्यए कॉस्मेटिकए खाद्य प्रसंस्करण और अरोमाथेरेपी के क्षेत्रों में सुगंध और स्वाद की रोजगार मूलक संभावनाओं एवं अवसरों की महत्ता पर प्रकाश डाला।

इस क्षेत्र में व्यवसाय की बढ़ती हुई संभावनाओं को देखते हुए श्री दास ने इस क्षेत्र में आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं पर बल देते हुए बायोटेक्नोलोजीए बायोइन्फोर्मेटिक्स, रसायनिकी, अत्याधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों के समावेशित उपयोग को आज की जरूरत बताया। श्री एसण्वीण् शुक्लाए निदेशकए एफएफडीसीए कन्नौज ने एफएफडीसी की गतिविधियों के बारे में उल्लेख किया और प्रशिक्षण सह कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री शुक्ला ने सभा को सूचित किया कि प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के विविध समूह की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

उत्तरांचल दीप
06.09.2018

तेलों के नवीन स्रोतों का पता लगाने पर दिया जोर

एफआरआई में सुगंधित तेल व परपरफ्यूमरी पर प्रशिक्षण कार्यशाला शुरु

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में सुगंधित तेल, परफ्यूमरी और अरोमाथेरेपी पर प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ हो गया। पांच दिनी कार्यशाला का आयोजन एफआरआई के रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग व सुगंध और सुरस विकास केंद्र (एफएफडीसी), कन्नौज की ओर से किया जा रहा है। कार्यशाला में भारत के विभिन्न कोनों से आए 30 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। एफआरआई के प्रमंडल कक्ष में प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि, डॉ सविता, निदेशक, एफआरआई, देहरादून ने मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सुगंध के विभिन्न लाभों पर प्रकाश डाला और परंपरागत के अलावा आवश्यक तेलों के नवीन स्रोतों एवं अनुप्रयोगों का पता लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। डॉ सविता ने बताया कि भारत में सुगनाध उद्योग ने प्रभावी विकास दर्ज किया है और यह उद्योग प्रतिवर्ष 10-11 प्रतिशत कि दर से बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि वन आधारित सुगंधित तेलों का जीविकोपार्जन एवं आय वृद्धि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका हो सकती है। उन्होंने सुगंध उद्यमियों के हित में प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग, एफआरआई और एफएफडीसी के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और भारत में सुगंध और स्वाद उद्योग की आवश्यकता को पूरा करने में इसके महत्व पर बल दिया। सम्मानित अतिथि के रूप में प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए, हरशरण दास, आईएएस और पूर्व प्रधान सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य, कॉस्मेटिक, खाद्य प्रसंस्करण और अरोमाथेरेपी के क्षेत्रों में सुगंध और स्वाद की रोजगार मूलक संभावनाओं एवं अवसरों की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस क्षेत्र में व्यवसाय की बढ़ती हुई संभावनाओं को देखते हुए दास ने इस क्षेत्र में आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं पर बल देते हुए बायोटेक्नोलोगी, बायोइन्फोर्मेटिक्स, रासायनिकी, अत्याधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों के समावेशित उपयोग को आज की जरूरत बताया। एसवी शुक्ला, निदेशक, एफएफडीसी, कन्नौज ने एफएफडीसी की गतिविधियों के बारे में उल्लेख किया और प्रशिक्षण सह कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। डॉ विनीत कुमार, प्रमुख रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग ने अथितियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सुगंधित तेलों के क्षेत्र में प्रभाग के प्रभावशाली अनुसंधान कार्यों के बारे में बात की। उद्घाटन सत्र में डॉ प्रदीप शर्मा, वैज्ञानिक-बी और प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक, एफडीडीसी, कन्नौज से डॉ नदीम अकबर और एपी सिंह, रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ वीके वार्ष्णेय, डॉ वाईसी त्रिपाठी, ग्रुप कोऑर्डिनेटर (रिसर्च), एफआरआई के विभिन्न प्रभागों के प्रमुख, और अन्य अधिकारी और शोध छात्रों ने भाग लिया।इधर, कार्यशाला के पहले तकनीकी सत्र के दौरान एसवी शुक्ला ने सुगंधित तेलों, परफ्यूमरी और अरोमाथेरेपी के क्षेत्र में स्रोतों, महत्व और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार एवं व्यापारिक संभावनाओं पर व्याख्यान दिया। डॉ प्रदीप शर्मा ने सुगंधित तेलों के निष्कर्षण तकनीकों के बारे में जानकारी दी। डॉ अमित पांडे, वन पैथोलॉजिस्ट ने सुगंध के गैर-पारंपरिक एवं नवीन स्रोत के रूप में कवको की महत्ता पर व्याख्यान दिय प्रमुख सुगंधित पौधों के चिकित्सीय और परफ्यूमरी मूल्यों पर डॉ नदीम अकबर द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण सह कार्यशाला 9 सितंबर तक जारी रहेगी और वैज्ञानिक ज्ञान, कौशल और उद्यमिता की प्रगति के लिए सुगनाधित तेलों के प्रसंस्करण, गुणवत्ता मूल्यांकन और चिकित्सीय लाभों और उनके अनुप्रयोगों को सुगंध और अरोमाथेरेपी में मौलिक और उपयोगी पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करेगी।

THE HAWK
06 Sept., 2018

Training Cum Workshop On 'Essential Oils, Perfumery & Aromatherapy'

Dehradun: The 5 days Training cum Workshop on "Essential Oils, Perfumery & Aromatherapy" jointly organized by Chemistry and Bioprospecting Division, Forest Research Institute (FRI), Dehra Dun and Fragrance and Flavour Development Centre (FFDC), Kannauj is commenced today on 5th September, 2018. Altogether 30 participants from different corners of India representing diverse fields are attending the training programme. Inaugurating the Training cum Workshop in the Board Room of FRI, Chief Guest Dr. Savita, Director, FRI, Dehradun highlighted various benefits of aroma on human health and environment and underlined the need to explore new sources and applications of essential oils other than the conventional ones. She stated that the aroma sector has shown impressive growth in India at the estimated rate of 10-11% annually. She expressed that forest based fragrances have a key role in women empowerment through providing livelihood and income opportunities to rural as well as urban women. She appreciated the collective efforts of Chemistry and Bioprspecting Division, FRI and FFDC for organizing the training in the interest of aroma entrepreneurs and emphasized its importance in catering the need of fragrance and flavour industry in India. Addressing the trainees as 'Guest of Honour', Shri Harsharan Das, IAS and Ex-Principal Secretary, Science & Technology, Govt. of Utter Pradesh, emphasized scope, potential, and opportunities of fragrance and flavour in healthcare, cosmetics, food processing and aromatherapy sectors. Under the prevailing scenario business in aromasector, Shri Das stressed the need of integration of various disciplines like bioinformatics, biotechnology, chemistry, modern processing and distillation technology to put the Indian aroma sector at the forefront of global trade.

Shri S.V. Shukla, Director, FFDC, Kannauj mentioned about the activities of FFDC and gave an account on technical sessions of the training cum workshop. Shri Shukla informed the gathering that the course curriculum of the training has been designed to meet the expectation of diverse group of participants. The programme started with lighting of Lamp followed by welcome address by Dr. Vineet Kumar, Head, Chemistry and Bioprospecting Division. Welcoming the guests and participants, Dr. Kumar talked about the impressive work record of Chemistry and Bioprospecting Divisions in the area of essential oils during yesteryears which paved the path for development of essential oil industries in India. The Inaugural Programme ended with the vote of thanks proposed by Dr. Pradeep Sharma, Scientist-B and Convener of the training programme. The Inaugural function was attended by Dr. Nadeem Akbar and Shri A.P. Singh from FFDC, Kannauj; Dr. V.K. Varshney, Dr. Y.C. Tripathi, Scientists of Chemistry and Bioprospecting Division; Group Coordinator (Research), Head of Divisions, FRI and other officers and research scholars of FRI.

During the first technical session Shri S.V. Shukla delivered a lecture on scope, sources, importance and national and international market potential of essential oils, perfumery and aromatherapy and business opportunities. Then Dr. Pradeep Sharma talked about essential oil extraction techniques. Further Dr. Amit Pandey, Forest Pathologist delivered a lecture stating fungi as a novel and non conventional source of aroma followed by a lecture by Dr. Nadeem Akbar on Therapeutic and Perfumery Values of major aromatic plants. The Training cum Workshop will continue till 9th September, 2017 and will provide a detailed exposure towards fundamental and applied aspects of processing, quality assessment and therapeutic benefits of essential oils and their applications in perfumery and aromatherapy for advancements of scientific knowledge, skills and entrepreneurship of the participants through lectures and practical demonstrations by experts from aroma industry, scientists and practicing aroma therapists.

उत्तर भारत लाइव
06.09.2018

सुगंधित तेलों के नवीन स्त्रोतों पर भी दिया जोर

उत्तर भारत लाइव ब्यूरो
uttarbharatlive.com

देहरादून। रसायन एवं जैव पूर्वेक्षण प्रभाग वन अनुसंधान संस्थान एफआरआई दून और सुगंध और सुरस विकास केंद्र एफएफडीसी कन्नौज द्वारा संयुक्त रूप से सुगंधित तेल पर फ्यूमरी और अरोमाथेरेपी पर पांच दिवसीय की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। भारत के विभिन्न कोनों से आए कुल 30 प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। एफआरआई के प्रमंडल कक्ष में प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि एफआरआई की निदेशक डा. सविता ने मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सुगंध के विभिन्न लाभों पर प्रकाश डाला और परंपरागत के अलावा आवश्यक तेलों के नवीन स्त्रोतों एवं अनुप्रयोगों का पता लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। सविता ने बताया कि भारत में सुगनाध उद्योग ने प्रभावी विकास दर्ज किया है और यह उद्योग प्रतिवर्ष 10से 11 कि दर से बढ़ रहा है।

महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका

वन आधारित सुगंधित तेलों का जीविकोपार्जन एवं आय वृद्धि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका हो सकती है। सुगंध उद्यमियों के हित में प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए रसायन एवं जैवपूर्वेक्षण प्रभागए एफआरआई और एफएफडीसी के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और भारत में सुगंध और स्वाद उद्योग की आवश्यकता को पूरा करने में इसके महत्व पर बल दिया।

भारत में सुगनाध उद्योग के प्रभावी विकास का दावा

विविध समूह की अपेक्षाओं पर किया डिजाइन

एसवी शुक्ला निदेशक एफएफडीसी कन्नौज ने एफएफडीसी की गतिविधियों के बारे में उल्लेख किया और प्रशिक्षण सह कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। शुक्ला ने सभा को सूचित किया कि प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के विविध समूह की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

सुगंध और स्वाद से रोजगार संभावनाएं

अतिथि प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए, हर शरण दास आईएएस और पूर्व प्रधान सचिव विज्ञान और प्रौद्योगिकी उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य, कॉस्मेटिक, खाद्य प्रसंस्करण और अरोमाथेरेपी के क्षेत्रों में सुगंध और स्वाद की रोजगार मूलक संभावनाओं एवं अवसरों की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस क्षेत्र में व्यवसाय की बढ़ती हुई संभावनाओं को देखते हुए दास ने इस क्षेत्र में आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं पर बल देते हुए बायोटे नोलोगी, बायोइन्फोर्मेटिक्स, रासायनिकी, अत्याधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों के समावेशित उपयोग को आज की जरूरत बताया।